1/10
वर्ष-3, अंक-273, पृष्ठः 10
मूल्यः एक रुपये

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

RNI/NO/UPHIN49792/16/4/2021

सच की अहमियत

हर सवेरे नया जोश

कानपुर | गुरुवार, 30 मई 2024 | कानपुर, लखनऊ, उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित | सूचना प्रसारण मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं : डाक्टर शशिकांत

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है।जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है द्य साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती हैद्य ऐसे कई पौधे/ चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता हैद्य साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती हैद्य मुख्यतः ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में

कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है द्य डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है द्य विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती हैद्य डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं , इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है। लक्षणः- साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं जिसमें - 1-पशु बेचैन होने लगता है द्य 2-उसके मुंह से लार गिरने लगती हैद्य 3- सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है द्य 4- मांसपेशियों में ऐंठन व दर्द होने लगता है ,अत्यंत कमजोरी की वजह से पशु लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता हैद्य 5- पशु अपने सर को पेट की ओर घूमांकर रखता हैद्य 6- मुंह से कड़वे बादाम जैसी गंध आती है द्य 7- रक्त का रंग चमकीली लाल हो जाता हैद्य 8- मृत्यु के समय दम घुटने जैसी कराह एवं पीड़ा होती है द्य उपचारः- 1- साइनाइड विषाक्तता के लक्षण प्रकट होते ही पशु को सोडियम नाइट्राइट 3 ग्राम एवं सोडियम थायोसल्फेट 15 ग्राम 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर नसों द्वारा चिकित्सा से परामर्श के बाद देना चाहिए द्य 2-सोडियम थायोसल्फेट 30 से 60 ग्राम मुंह से देना चाहिए द्य 3- साइनाइड ग्रस्त पशु को ज्यादा पानी पिलाना चाहिए द्य 3- चरागाहों में चरने के लिए ले गए पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार व चरी की फसल नहीं खाने देंद्य 4- अच्छी सिंचाई की गई ज्वार वह चारी ही पशुओं को हरे चारे के रूप में दें दो से चार बार बारिश होने के बाद बड़ी फसल ही पशुओं को खिलाएं द्य 5- साइनाइड ग्रस्त चारे को हे के रूप में संरक्षित कर सकते हैं द्य 6- साइनाइड ग्रस्त चारे को कुछ समय तक सुखाने के बाद उसमें शीरा मिलकर साइलेज के रूप में खिलाने से भी विष का प्रभाव कम हो जाता है । 7- छोटे मुरझाए हुए पीले वह सुख कर ऐंठे हुए पौधे को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 326 कानपुर, गुरुवार 30 मई 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम दल में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है।जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है द्य साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती हैद्य ऐसे कई पौधे/ चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता हैद्य साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती हैद्य मुख्यत: ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है द्य डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है द्य विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती हैद्य डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं , इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती हैद्य द्य

लक्षण- साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं जिसमें - 1-पशु बेचैन होने लगता है द्य 2- उसके मुंह से लार गिरने लगती हैद्य 3- सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है।

विवेकानंद रॉक मेमोरियल में पीएम मोदी... 12 | मिट्टी का अवैध खनन कर प्लाट में किया जा रहा... 10

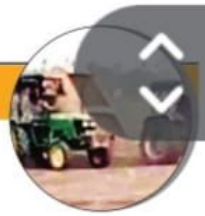

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 15 | अंकः 226
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
गुरुवार | 30 मई, 2024

ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाने के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने बुधवार को प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं नामक एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर

चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है।

उन्होंने बताया कि साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती है।

उन्होंने बताया कि ऐसे कई पौधे/चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है। उन्होंने बताया कि साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती है। डॉ.शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है।

विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती है। उन्होंने साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने वाले लक्षणों व उपचार के बारे में बताया।

दैनिक
उद्योग नगरी टाइम्स
E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com
सत्य ही कर्तव्य
(हिन्दी दैनिक प्रातःकालीन) कानपुर, गुरूवार 30 मई 2024 (R.N.I.No. UPHIN/2010/47220)

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं :डाक्टर शशिकांत

कानपुर, 29 मई (यू0एन0टी0)। अनवर अशरफ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है। जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है स साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो

जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती हैस ऐसे कई पौधे चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता है। साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न भिन्न होती है। मुख्यतः ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है। डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है। विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती है। डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं, इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं-डाक्टर शशिकांत वैज्ञानिक पशुपालन

अनवर अशरफ

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है।जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है। साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की

मृत्यु हो जाती हैद्य ऐसे कई पौधे/ चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता है। साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती हैद्य मुख्यत: ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है। डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है।विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती है। डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं , इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है। लक्षण– साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं जिसमें – ।–पशु बेचैन होने लगता है ।2–उसके मुंह से लार गिरने लगती हैद्य 3– सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है । 4– मांसपेशियों में ऐंठन व दर्द होने लगता है ,अत्यंत कमजोरी की वजह से पशु लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता हैद्य 5– पशु अपने सर को पेट की ओर घूमांकर रखता हैद्य 6– मुंह से कड़वे बादाम जैसी गंध आती है। 7– रक्त का रंग चमकीली लाल हो जाता है। नाइट्राइट 3 ग्राम एवं सोडियम थायोसल्फेट 15 ग्राम 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर नसों द्वारा चिकित्सा से परामर्श के बाद देना चाहिए । 2– सोडियम थायोसल्फेट 30 से 60 ग्राम मुंह से देना चाहिए। 3– साइनाइड ग्रस्त पशु को ज्यादा पानी पिलाना चाहिए द्य 3– चरागाहों में चरने के लिए ले गए पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार व चरी की फसल नहीं खाने दें। 4– अच्छी सिंचाई की गई ज्वार वह चारी ही पशुओं को हरे चारे के रूप में दें दो से चार बार बारिश होने के बाद बड़ी फसल ही पशुओं को खिलाएं । 5– साइनाइड ग्रस्त चारे को हे के रूप में संरक्षित कर सकते हैं । 6– साइनाइड ग्रस्त चारे को कुछ समय तक सुखाने के बाद उसमें शीरा मिलकर साइलेज के रूप में खिलाने से भी विष का प्रभाव कम हो जाता है । 7– छोटे मुरझाए हुए पीले वह सुख कर ऐंठे हुए पौधे को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।

प्रचंड गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं

डॉ. शशिकांत

पशु पालकों को वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने दी जानकारी

कानपुर, 29 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है। जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है। इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है। साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती है। ऐसे कई पौधे/चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता है। साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती है। मुख्यत ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है। वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है। विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती है। डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं। जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं, इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बृहस्पतिवार • 30 मई • 2024

र्मी में ज्वार, बाजरा एवं चरी का चारा ाने से हो सकती है पशुओं की मौत'

ाते पशु। फोटो : एसएनबी

हारा न्यूज ब्यूरो
ुर।

र्मी में ज्वार, वाजरा एवं चरी के चारे में विष से पशुओं को वचाएं। यह सलाह ुर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विद्यालय के कृषि विशेषज्ञों ने किसानों है।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद सिंह के निर्देश पर वुधवार को कृषि केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक शंकांत ने एडवाइजरी जारी कर वताया र्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा आवश्यक है। तपती गर्मी में इस समय के रूप में ज्वार एवं वाजरे की फसल है, जिसमें हाइड्रोसायनिक नामक होता है, जो पशु को नुकसान करता है। म्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद जेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है। ूकोसाइड पर चारे रूमेन में मौजूद म की क्रिया से ायानिक अमल है, जो जहर होता इनाइड विषाक्त में ोजन के वाहक प्रभावित होने के कारण शरीर के में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती है। न्होंने वताया कि ऐसे कई पौधे व चारे हैं सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती तु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 हरे चारे में एवं 200 पीपीएम सूखे सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जव हरे 600 पीपीएम से ज्यादा हो जाता है तो लिए खतरनाक सावित होता है। इड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती है। : ज्वार, वाजरा, चरी आदि चारों में कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में जेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा कारण इनके सेवन से पशुओं की मृत्यु ो है। डॉ. शशिकांत ने वताया कि चारे में की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में न की उपस्थिति, किसान द्वारा वुवाई य चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है। विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हों व पीली पड़ गई हों, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा वढ़ जाती है। हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच में इसे खा लेते हैं। जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, वाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

कृषि विवि के वैज्ञानिकों ने जारी की एडवाइजरी

बोले, ज्वार, बाजरा व चरी के चारे में होता है विष

लक्षण : साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट वाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं, जिसमें पशु वैचेन होने लगता है, उसके मुंह से लार गिरने लगती है, सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है, मांसपेशियों में ऐंठन व दर्द होने लगता है, अत्यंत कमजोरी की वजह से पशु लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता है, पशु अपने सिर को पेट की ओर घुमाकर रखता है, मुंह से कड़वे वादाम जैसी गंध आती है, रक्त का रंग चमकीला लाल हो जाता है और मृत्यु के समय दम घुटने जैसी कराह एवं पीड़ा होती है।

उपचार : साइनाइड विषाक्तता के लक्षण प्रकट होते ही पशु को सोडियम नाइट्राइट 3 ग्राम एवं सोडियम थायोसल्फेट 15 ग्राम 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर नसों द्वारा चिकित्सक से परामर्श के वाद देना चाहिए। सोडियम थायोसल्फेट 30 से 60 ग्राम मुंह से देना चाहिए। साइनाइड ग्रस्त पशु को ज्यादा पानी पिलाना चाहिए। चरागाहों में चरने के लिए ले गए पशुओं को कम वढ़ी हुई ज्वार व चरी की फसल नहीं खाने दें। अच्छी सिंचाई की गई ज्वार व चरी ही पशुओं को हरे चारे के रूप में दें। दो से चार वार वारिश होने के वाद वड़ी फसल ही पशुओं को खिलाएं। साइनाइड ग्रस्त चारे को कुछ समय तक सुखाने के वाद उसमें शीरा मिलकर साइलेज के रूप में खिलाने से भी विष का प्रभाव कम हो जाता है। छोटे मुरझाए हुए पीले व सूखकर ऐंठे हुए पौधे को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।

गर्मी से ज्वार, बाजरा एवं चरी के चारे में मौजूद विष से पशुओं को बचाएं: डा शशिकांत

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने बताया कि गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए हरा चारा नितांत आवश्यक है। इस तपती गर्मी में इस समय हरे चारे के रूप में ज्वार एवं बाजरे की फसल मौजूद है।जिसमें हाइड्रोसयनिक नामक अम्ल होता है जो पशु को नुकसान करता है इस अम्ल का निर्माण हरे चारे में मौजूद साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड के कारण होता है, इन ग्लूकोसाइड पर चारे अथवा रूमेन में मौजूद एंजाइम की क्रिया से हाइड्रोसायानिक अमल बनता है जो जहर होता है द्य साइनाइड विषाक्त में ऑक्सीजन के वाहक एंजाइम प्रभावित होने के कारण शरीर के ऊतकों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है जिससे दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती हैद्य ऐसे कई पौधे/ चारे हैं जिनके सेवन से साइनाइड विषाक्त हो सकती है, किंतु इसमें साइनाइड की मात्रा 500 पी पी एम हरे चारे में एवं 200 पी पी एम सूखे चेहरे में सुरक्षित रहता है, परंतु यह मात्रा जब हरे चारे में 600 पी पी एम से ज्यादा हो जाता है तो पशु के लिए खतरनाक साबित होता हैद्य साइनाइड की मात्रा विभिन्न मौसमों में एवं पौधों के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न होती हैद्य मुख्यतः ज्वार, बाजरा चारी आदि चारों में कभी-कभी कुछ विशेष परिस्थितियों में साइनोजेनिक ग्लूकोसाइड की अधिक मात्रा होने के कारण इनके सेवन में पशुओं की मृत्यु हो जाती है द्य डॉ शशिकांत ने बताया कि चारे में विष की मात्रा उसकी अवस्था, मृदा में नाइट्रोजन की उपस्थिति, किसान द्वारा बुवाई के समय चारे की वृद्धि के लिए दी गई यूरिया या अन्य खाद एवं पानी की कमी आदि कारकों पर निर्भर करती है द्य विशेष रूप से पानी की कमी के कारण जिन पौधों की वृद्धि रुक गई हो, पत्तियां सूख कर मुरझा गई हो वह पीली पड़ गई हो, ऐसे चारे में साइनाइड की मात्रा बढ़ जाती हैद्य डॉक्टर कांत ने कहा हरे चारे के अभाव में भूखे पशु यह चारा देखते ही लालच बस इसे खा लेते हैं जानकारी के अभाव में पशुपालक भी मुरझाई हुई एवं अविकसित ज्वार, बाजरा एवं चरी को हरे चारे के अभाव में देने लगते हैं , इसके कारण पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचार

1- साइनाइड विषाक्तता के लक्षण प्रकट होते ही पशु को सोडियम नाइट्राइट 3 ग्राम एवं सोडियम थायोसल्फेट 15 ग्राम 200 मिलीलीटर पानी में घोलकर नसों द्वारा चिकित्सा से परामर्श के बाद देना चाहिए। 2-सोडियम थायोसल्फेट 30 से 60 ग्राम मुंह से देना चाहिए। 3- साइनाइड ग्रस्त पशु को ज्यादा पानी पिलाना चाहिए। 3- चरागाहों में चरने के लिए ले गए पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार व चरी की फसल नहीं खाने दें। 4- अच्छी सिंचाई की गई ज्वार वह चारी ही पशुओं को हरे चारे के रूप में दें दो से चार बार बारिश होने के बाद बड़ी फसल ही पशुओं को खिलाएं। 5- साइनाइड ग्रस्त चारे को हे के रूप में संरक्षित कर सकते हैं। 6-साइनाइड ग्रस्त चारे को कुछ समय तक सुखाने के बाद उसमें शीरा मिलकर साइलेज के रूप में खिलाने से भी विष का प्रभाव कम हो जाता है। 7- छोटे मुरझाए हुए पीले वह सुख कर ऐंठे हुए पौधे को चारे के रूप में उपयोग नहीं करें।

लक्षण

साइनाइड युक्त चारे के अचानक अधिक सेवन के 10 से 15 मिनट बाद ही पशु में विषाक्त के कारण प्रकट होने लगते हैं जिसमें - 1- पशु बेचैन होने लगता है 2-उसके मुंह से लार गिरने लगती है 3- सांस लेने में कठिनाई होने लगती है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है 4- मांसपेशियों में ऐंठन व दर्द होने लगता है ,अत्यंत कमजोरी की वजह से पशु लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता है 5- पशु अपने सर को पेट की ओर घूमांकर रखता है 6- मुंह से कड़वे बादाम जैसी गंध आती है 7- रक्त का रंग चमकीली लाल हो जाता है 8- मृत्यु के समय दम घुटने जैसी कराह एवं पीड़ा होती है